संतुलन संसार का नियम

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संतुलन का अर्थ है तुला का समान रहना। संतुलन शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व है। सृष्टि संतुलन से चल रही है। सूर्य का समय से उदित होना और अस्त हो जाना, दिन–रात का होना आदि क्रियाएं प्राकृतिक संतुलन को दिखा रही है। संतुलन के बिना जीवन असम्भव है। हमारे शरीर में भी संतुलन है तभी शरीर ठीक से कार्य कर रहा है। यदि शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है तो वात, पित्त, कफ असंतुलित हो जाते हैं। जहां असंतुलन है वहां दुःख है। पटरियों पर चलती हुई ट्रेन यदि असंतुलित हो जाए तो एक क्षण में हजारों आदमियों की जान खतरे में पड़ सकती हैं।

पृथ्वी का भी अपना एक संतुलन है। अगर यह संतुलन कभी डगमगा जाये तो न जाने कितने लोग काल–कवलित हो सकते हैं। जहां पर असंतुलन है वहां विनाश है। सृष्टि का संतुलन जीवनदायक है। प्रकृति अपने तत्वों के माध्यम से मानव का संरक्षण करती है। यह सृष्टि ही पाँच तत्वों का परिणाम है। सभी वस्तुएं संतुलन से कार्य कर रही हैं। प्रकृति को अधिक दोहन के द्वारा जब असंतुलित कर दिया जाता है तो वह मानव के लिए खतरा उत्पन्न कर देती है।

पर्यावरण बहुत ही व्यापक शब्द है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड पर्यावरण में समाया है। जिसमें हम जी रहे है, या मानव या मानवेतर प्राणी जहां अपनी चेतना का विकास करते हैं, वह पर्यावरण कहलाता है। चौरासी लाख जीव योनियों का उत्पत्ति स्थान और संरक्षण पर्यावरण के कारण ही होता है। हमारे चारों ओर जो कुछ भी है वह सब पर्यावरण का सहायक तत्त्व है। जीवन का अस्तित्व प्राकृतिक तत्त्वों के संतुलन पर टिका है। जिस वातावरण से पृथ्वी घिरी है, उस वातावरण में प्रत्येक तत्त्व एक अनुपात में है। यदि इस अनुपात में एक सीमा से अधिक अन्तर पड़ जाये तो जीवन समाप्त भी हो सकता है।

पर्यावरण के निर्माण में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश वनस्पति, मानव तथा मानवेतर सभी प्राणियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिये केवल इतना समझना आवश्यक नहीं है कि प्रकृति हमारे लिये उपयोगी है। समझना यह है कि हम प्रकृति के एक अवयव हैं। जिस प्रकार हममें जीवन है उसी प्रकार प्रकृति के प्रत्येक कण–कण में जीवन है। मानव प्रकृति की उपेक्षा करके अपने अस्तित्त्व को नहीं बचा सकता। यदि उसे अपने अस्तित्त्व की रक्षा करना है तो जीवन के हर रूप को पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तक को सुरक्षित रखना होगा। इन पांचों तत्त्वों की सुरक्षा और संरक्षा मनुष्य पर निर्भर है।

प्रकृति ने मानव को उपभोग के लिये एक अक्षय खजाना दिया है। यदि इसका सदुपयोग किया जाय तो यह समाप्त होने वाला नहीं है, किन्तु यदि इन तत्त्वों का दुरुपयोग किया जाएगा तो समाप्त भी हो जायेगा और मानव के अस्तित्त्व के लिये संकट भी उपस्थित हो जायेगा। इसलिये सुरक्षित पर्यावरण मानव के अस्तित्त्व के लिये आवश्यक है। गीता में पंचमहाभूतों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को भगवान् कृष्ण ने अपनी प्रकृति कहा है। ये तत्त्व मानव के लिए उतने ही पूजनीय हैं जितने की ईश्वर। इनकी पूजा करना ईश्वर की पूजा करना है। यही कारण है कि वृक्षों में देवत्व का आरोप करके हमारे देश में वृक्षों की पूजा की जाती है।

उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य अपने पुराने आदर्शों और परम्पराओं को भूलकर प्राकृतिक तत्त्वों का अन्धाधुन्ध दोहन कर रहा है। इसके कारण असंतुलन पैदा हो रहा है। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का उपयोग मानव के अनैतिक आचरण का परिणाम है। हम किसी भी तरह से पर्यावरण के घटकों के पदार्थों से छेड़खानी करते हैं तो उसके दुष्परिणाम भुगतने को तैयार रहना पड़ेगा। चाहे एकेन्द्रिय जीव हों या द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जीव हों, यदि इनमें से किसी एक का भी विनाश होता है तो हमारी खाद्य श्रृंखला विघटित हो जायेगी, जिससे हमारा इकोसिस्टम बिगड़ जायेगा। एक उदाहरण से समझते हैं, जैसे मृत पशुओं को गिद्ध, चील आदि खाते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता लेकिन वर्तमान समय में देखते हैं कि गिद्ध, चील आदि नहीं दिखाई देते तब मृत पशुओं का क्या किया जाये? इन मृत पशुओं से विभिन्न प्रकार के रोगादि फैल रहे हैं।

आज वर्तमान समय में मनुष्य समस्याओं से घिरा हुआ है। जब किसी वस्तु को आवश्यकता से अधिक, अथवा बेवजह दोहन किया जाता है तब समस्या उत्पन्न होती है। प्रत्येक समस्या को उत्पन्न किसी और ने नहीं स्वयं मनुष्य ने की है। गांव से लेकर महानगारों में जल, पानी की विकट समस्या, बिजली, प्रकाश की समस्या, रसोई गैस की समस्या, साग–सब्जी, वनस्पति की समस्या, बाढ़ की समस्या, भूकम्प, सुनामी की समस्या इत्यादि–ये सभी समस्याएं मनुष्य द्वारा ही सृजित हैं।

मनुष्य प्रकृति से जितना ग्रहण करता है यदि उतना प्रकृति को दे तो मानव और प्रकृति के बीच में संतुलन बना रहेगा और प्रकृति भी हरी–भरी रहेगी। पर्यावरण का संरक्षण मानव अस्तित्व का संरक्षण है।